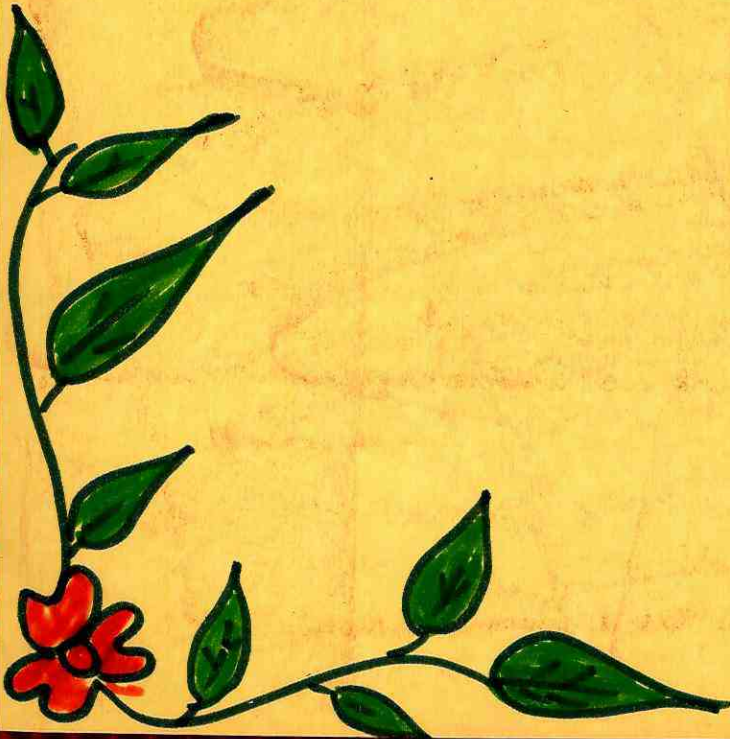
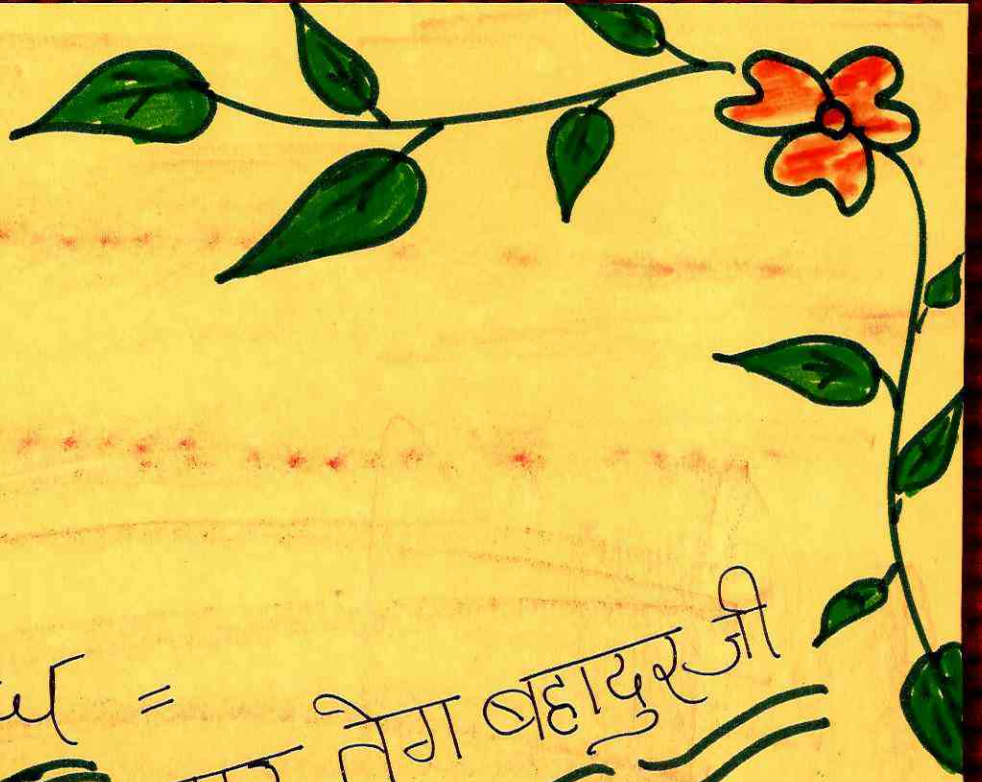


निबंध = गुरु तेग बहादुर जी





## सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के उपदेशक

गुरु तेग बहादुर जी सिखों के नौवें गुरु थे। अपने तौपखाने कौशल और कमजोरों के रक्षक के रूप में जाने वाले, गुरु तेग बहादुर सिंह जी ने गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का प्रचार करते हुए देश पर्यटन में यात्रा की।

गुरु तेग बहादुर जी ने 116 शब्दों और 15 रागों की रचना की और उनकी शिक्षाओं आदि को गुरु ग्रंथ में शामिल किया गया है।

### गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएं

1. "जो दुख में शोक नहीं करता और सुख में प्रसन्न नहीं होता, जो भय और मोह से मुक्त है, और जिसके लिए सोना और धूल समान हैं, जिसने प्रशंसा और दोष (चापलूसी और निंदा) दोनों को त्याग दिया है जो लालच से मुक्त है, सांसारिक मोह और अभिमान से परे है वही सच्चा पुरुष है। सभी दयालु गुरु एक शिष्य को अपनी कृपा से आशीर्वाद देते हैं, सभी शिष्य इस धन्य आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त करता है और भगवान के साथ जल के रूप में मिश्रित (विलय) होता है।"



गुरु तेग बहादुर जी ने दुख और सुख के प्रति उदासीन रहने के लिए, चापलूसी और आरोप जैसे दोषों से दूटकारा पाने के लिए, और हर दूसरे सांसारिक सुख के लिए दृढ़ विश्वास का उपदेश दिया। जब किसी ने आत्म-नियंत्रण की कला में महारत हासिल कर ली है तो वह वास्तव में आध्यात्मिक हो सकता है।

2. अपमान को एक समान समझना - चाहिए। प्रशंसा और दोष और यहां तक कि मोक्ष की खोज दोनों को छोड़ देना - चाहिए। यह है एक (गुरुमुख) धर्मपरायण व्यक्ति बहुत कीटन और दुर्लभ है जो उस पर चल्ना जानता है।

3. गुरु तेग बहादुर ने अपने शिष्यों को लालच, इच्छा, अहंकार और दर्द को दूर करने की शिक्षा देकर उन्हें देवत्व का मार्ग दिखाया। नानक जी कहते हैं, "जो अपने अहंकार को जीत लेता है और भगवान को सभी चीजों के एकमात्र कर्ता के रूप में देखता है, वह 'जीवन मुक्ति' (जीवित रहते हुए मुक्त हो जाता है) प्राप्त कर लेता है, इसे वास्तविक सत्य के रूप में जानें।"

4. उन्होंने अपने अनुयायियों को शांति के मार्ग की ओर निर्देशित किया। गुरु तेग बहादुर जी ने दुनिया को अपने जीवन से संतुष्ट रहना सिखाया, क्योंकि दुनिया में सब कुछ "गुरु नानक जी ही कर रहे हैं।" उन्होंने हर जीवन-स्थिति के साथ शांति बनाकर जीवन मुक्ति प्राप्त करने का विचार फैलाया।



5. "अपना सिर दौड़ दे, परन्तु उन को न दौड़, जिन्हें आपने सुरक्षित रखने का बीड़ा उठाया है। अपने प्राण का बलिदान दे, परन्तु अपने विश्वास को ना त्यागे।"

6. गुरु तेग बहादुर जी कमजोरों के एक दयालु उद्धारकर्ता थे, और उन्होंने यही उपदेश दिया। उन्होंने अपने शिष्यों को उन लोगों की रक्षा करना सिखाया। जिन्हें सुरक्षा की आवश्यकता है, भले ही यह किसी के अपने जीवन की कीमत पर क्यों न हो।

7. "जंगलों की तलाश में क्यों जाएं (उसे खोजने के लिए)। वह जो सभी दिलों में रहता है लेकिन हमेशा शून्य रहता है, आपके दिल में भी व्याप्त है। जैसे सुगंध गुलाब भरती है और दर्पण को प्रतिबिंबित करती है, भगवान बिना किसी विराम के व्याप्त हैं; खोज उसे तुम्हारे भीतर। गुरु ने इस ज्ञान को प्रकट किया है कि ओम् अंदर और बाहर व्याप्त है। नानक कहते हैं, अपने आप को जाने बिना संदेह का मैल नहीं हटाया जाएगा।"

गुरु ने सर्वशक्तिमान की सर्वत्यापीता पर दबाव डाला। प्रभु हमारे भीतर रहते हैं, और उनसे जुड़ने के लिए केवल अपने भीतर झांकने की जरूरत है। उन्होंने उपदेश दिया कि ब्रह्मांड का प्रतीक, ओम् (ओम), आपके अंदर, आपके बाहर, मेरे अंदर और धरती पर मौजूद हर जगह है।